'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ४८ } वाराणसी, गुरुवार, २३ अप्रैल, १९५९ { पचीस रुपया वार्षिक

सम्मेलन का सायं-प्रवचन

सर्वोदय-नगर (अजमेर) २८-२-'५९

जागतिक समस्याओं का हल ढूँढ़ना ही हमारा उद्देश्य है !

पक्षातीत हुए बिना समाज की सेवा और राष्ट्र का निर्माण असंभव है !

गांधीजी ने 'अनासक्तियोग' में लिखा है कि "मानव को अपने स्वभाव का ज्ञान नहीं रहता और जो ज्ञान रहता है, वह उसका स्वभाव नहीं होता। जो कहता है, 'मैं क्रोधी हूँ', वह क्रोधी स्वभाव का नहीं होता।" उनके इस वचन से मुझे दर्शन के मूल तक पहुँचने में बड़ी मदद मिली। शंकराचार्य ने ये ही विचार दूसरे ढंग से व्यक्त किये हैं। एक गरीब उन्हें अपना दुःख बतलाने लगा। इस पर उन्होंने कहा कि 'जब तुम अपना दुःख जान गये तो तुम दुःखी नहीं हो'—यह जानने की तुम्हें अक्ल होनी चाहिए। जब मैं अपने सामने दीपक देखता हूँ तो यह स्पष्ट है कि मैं दीपक से भिन्न हूँ। एक बार गांधीजी ने कहा था कि एक-आध बार भूल हो जाय और उसे स्पष्ट स्वीकार कर लिया जाय तो आप उससे मुक्त हो जाते हैं। किन्तु यदि आप उसे स्पष्ट स्वीकार नहीं करते, तो उससे बद्ध हो जाते हैं।

विचार की उचित पद्धति

विचार की यही समुचित पद्धति है। वह हमें अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान करा देती है। विचार करते समय मुझे ध्यान में ही नहीं आता था कि मैं क्या कर रहा हूँ और कहाँ पहुँचूँगा। लेकिन गांधीजी कहा करते कि अपना काम करते जाओ। अगर काम हृदय से और उचित भूमिका पर हुआ तो स्वतंत्रता तो बहुत मामूली चीज है, जागतिक प्रश्न भी उससे हल होंगे। बापू थे तो मुझे यह कल्पना ही नहीं थी कि भारत का काम मुझे अपने हाथ में लेना होगा। कहा जाता है कि परमाणु में ब्रह्माण्ड समाया हुआ है। मैं छोटा-सा भी काम करता तो दृष्टि ब्रह्माण्ड की ओर ही रहती। यही मानता था कि मैं पृथ्वी का मध्यबिन्दु हूँ। सिर्फ दर्शक के नाते सभी चीजों को देखता हूँ। सामाजिक, नैतिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक प्रवाहों एवं शक्तियों का चिन्तन और मनन करता रहा। साथ ही यह कसकर देखता जाता था कि अपने हाथ में रहनेवाले साधनों पर अपना कब्जा है या नहीं। उसके होने पर कहीं भी खतरे की कोई बात नहीं, यह विश्वास भी मालूम पड़ता था।

लोग मुझे 'रणछोड़' कहते हैं

यह काम अनेक शाखाओं में फैल निकला। उससे कुछ कठिनाइयाँ भी पैदा हुई। हम कहाँ से कहाँ आ पहुँचे हैं! भूदान, फिर छठे हिस्से का दान, फिर ग्रामदान! यह सारा छोड़कर अब मुट्ठीभर अनाज—आखिर यह कैसा प्रकार है? लोग मुझे 'रणछोड़' कहते हैं। गुजरात में भगवान को ही 'रणछोड़' कहा जाता है। मथुरा छोड़कर वह द्वारका में आ बसा। फिर उसके सामने मेरी बिसात ही क्या? लेकिन यह सब तो मैं विनोद में ही कह गया।

राष्ट्रपति का संकेत

अब हम लोगों ने नींव रखने का काम उठाया है। हम लोगों ने ऐसी चीजें हाथ में ली हैं, जिनसे हमारा सबके यहाँ प्रवेश होगा। यह १५-२० वर्षों का कार्यक्रम नहीं। यह एक दिन में होना चाहिए। राष्ट्रपति ने अपने घर पर सर्वोदय-पात्र रखा है। क्या हम लोग उनकी अयूब खाँ से कम इज्जत करते हैं? वह डर से लोगों को अपने वश में करता है। राष्ट्रपति ने प्रेम के चिह्नरूप में सर्वोदय-पात्र की स्थापना की है। उनके पास भी तो सत्ता है। लेकिन उन्होंने भारत के लिए यह संकेत किया है। अगर भारत में संवेदना होती तो लोगों को इस घटना का पता चलते ही सभी (जिनका इस कल्पना से विरोध है, उन्हें छोड़कर) अपने-अपने घरों में सर्वोदय-पात्र की स्थापना कर देते। जो शान्ति चाहते हैं, वे उसके प्रतीक-रूप में सर्वोदय-पात्र रखें, जिससे वे अशान्ति में मदद न देंगे। उसका स्थूल रूप यह है कि जो हाथ इस पात्र में अनाज डालेगा, वह हाथ कभी पत्थर न फेंकेगा। तभी शान्ति-स्थापना का कार्य हो सकेगा।

सैनिक भी सर्वोदय-पात्र रखें !

शान्तिसेना की कल्पना सेना जैसी कल्पना नहीं। एक जाता है, तो दूसरा आता है। लाखों नौकर काम कर रहे हैं और उनके विरुद्ध जनता की ओर से शिकायत चलती ही रहती है—इन सेवकों के बारे में ऐसी बात नहीं होगी। सिवा इसके सशस्त्र सेना की अपेक्षा यह काम कितने कम पैसे में होगा! अगर हर घर में सर्वोदय-पात्र की स्थापना हो जाय तो अलग से शान्तिसेना की जरूरत ही महसूस न होगी। सेना के सिपाही भी अपने घर पर सर्वोदय-पात्र रखें। इसके लिए उन्हें अपनी नौकरी छोड़ने की जरूरत नहीं। वे बड़े प्रेम से नौकरी करें। लेकिन यह कबूल करें कि हमारे घर से अशान्ति की प्रेरणा नहीं मिलेगी।

सभी का सहयोग अपेक्षित

मैं आपके सामने यह दस वर्षों का कार्यक्रम नहीं रख रहा हूँ। वह तो दूसरा ही कार्यक्रम है। वह ग्रामस्वराज्य का कार्यक्रम है। इसलिए मैं सबके सहयोग की अपेक्षा करता हूँ। कांग्रेस के अध्यक्ष ने सहयोग की माँग की है। पण्डितजी ने भी राष्ट्रनिर्माण के काम में सहयोग माँगा है। मैं सहयोग देना चाहता हूँ—सर्वोदय-पात्र के द्वारा। पंद्रह दिनों के भीतर सारे हिन्दुस्तान में सर्वोदय-पात्रों की स्थापना हो जाय। मेरे कहने का शब्दशः अर्थ न लगायें। अहिंसा में शब्द नहीं पकड़े जाते।

पात्रों की स्थिरता

पात्रों के टिक पाने की कल्पना मुझे डराती नहीं। जब एक हवा तैयार होती है, तो उसके स्थायी न होने का कोई कारण ही नहीं। क्या हम यह काम छोड़ देंगे? सर्वोदय-सेवक रहेंगे (सभी पात्र रखेंगे तो शान्तिसैनिकों की जरूरत ही न रहेगी, इसलिए मैं 'शान्ति-सैनिक' शब्द का प्रयोग नहीं करता) और वे ही अन्य कामों के साथ ही पात्रों को भी स्थायिता प्रदान करेंगे।

राष्ट्रीय सरकार में कौन है, यह प्रश्न गौण

कृपलानीजी ने राष्ट्रीय सरकार से माँग की है। सरकार से माँग करने की कोई जरूरत नहीं, लोग ही वह काम कर डालेंगे। सर्वोदय-पात्र की स्थापना द्वारा जनता ही वैसी इच्छा प्रकट करेगी। फिर राष्ट्रीय सरकार में कौन है? यह प्रश्न गौण हो जायगा।

मैंने बहनों से कहा कि आप लोग गांधीजी का लोक-सेवक-संघ बनायें। वे कहें कि हमें पक्षों से कोई वास्ता नहीं। हम गांधीजी के मनोवांछित लोक-सेवक-संघवाले हैं। स्त्री-शक्ति संरक्षक-शक्ति है। वह समाज के टुकड़े करनेवाली नहीं है।

सरकारी अधिकारी पक्षमुक्त हों

मैंने सरकारी अधिकारियों के समक्ष कहा कि हमें शासन-मुक्त और शोषणरहित समाज की स्थापना करनी है। दोनों में कितना बड़ा अन्तर है! मैंने उनसे कहा—ऐसा समाज बनानेवाले आप लोग हैं, क्योंकि सरकार चाहती है कि आप लोग पक्षमुक्त रहें। सरकार पक्षों का काम न कर जनता की सेवा करे—इसका अर्थ यही हुआ कि आप लोग वेतन सरकार से लें और काम हमारा करें। सरकार को मिटाने का काम सरकार स्वयं करना चाहती है। अगर उसे यह विचार पसंद न होता, तो वह कभी यह न कहती कि राष्ट्रपति, स्पीकर, न्यायाधीश, मिलिटरी, पुलिस, शिक्षक, विशेषज्ञ पक्षमुक्त रहें। फिर बच ही क्या रहा? राष्ट्रपति भले ही कीचड़ से पैदा हों, पर उन्हें कमलपत्र की तरह ही रहना चाहिए—ऐसा ही चाहा जाता है।

राजनैतिक दल विद्यार्थियों का संगठन खड़ा करने का प्रयत्न किया करते हैं। शिक्षकों की तो उन्हें परवाह ही नहीं। मुझे लगता है कि यह बड़ी खतरनाक बात है। विद्यार्थी पक्षमुक्त ही रहें और विश्वव्यापक चिन्तन करें। वे स्वतंत्र वृत्ति रखें। विचार-स्वातंत्र्य या मुक्त विचार उनका हक ही है। इस तरह यह पक्षमुक्ति का विचार है।

पक्षातीत हो शान्ति-सैनिक बनें

एक राजनैतिक दल के एक भाई ने पूछा कि 'पक्ष में रहकर भी पक्षातीत क्यों नहीं रहा जा सकता? उससे बहुत बड़ा काम होगा। हम लोग जो पक्ष में हैं, वह भी सेवा की भावना से ही हैं।' इसी तरह की विचार-सरणि के कारण विभिन्न पक्षों में गांधीजी को माननेवाले लोग दिखाई पड़ते हैं। ये सभी सेवासक्त, सेवाव्याकुल लोग हैं। अगर वे ऐसा कहें कि 'हम लोग भगवान की शपथ लेकर बता रहे हैं कि पक्ष में रहकर भी हम सत्य को न छोड़ेंगे' तो मुझे कुछ कहना नहीं है।

इसलिए मैं पक्ष में रहनेवाले ऐसे लोगों का आवाहन करता हूँ कि वे शान्ति-सैनिक बन सकते हैं। पक्षातीतता और पक्षमुक्तता का अर्थ एक ही है। 'किसी भी पक्ष में न रहना' यह पक्षमुक्ति का अर्थ नहीं। बाह्य रूप में पक्षों से बचने मात्र से वह हो नहीं सकती। वास्तव में पक्षातीत वृत्ति ही पक्षमुक्ति है। अगर वे अन्तरात्मा को साक्षी रखकर कहें कि 'हम व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनैतिक कामों में सत्य और अहिंसा को नहीं त्यागेंगे' तो वे शान्ति-सैनिक के रूप में आगे आयें। मैंने उनके लिए दरवाजा खोल दिया है। इसलिए जो राजनीति में रहकर सर्वोदय-समाज बनाना चाहते हैं, वे वहीं रहें। भले ही बाद में वह मृगमरीचिका सिद्ध हो।

विधायक कार्यकर्ता शान्ति-सैनिक ही

मैंने यह मान ही लिया है कि सभी रचनात्मक कार्यकर्ता शान्ति-सैनिक ही हैं। अगर वे वैसे न हों, तो घोषित कर दें। जो शान्ति सैनिक नहीं, वह खादी-कार्यकर्ता भी नहीं। जिसकी देह पर खादी हो और हृदय में द्वेष, वह खादी का सिपाही ही नहीं है। गांधीजी ने जब शान्तिसेना की माँग की थी तो उस समय विशेष लोग आगे नहीं आये, यह मैं जानता हूँ। गांधीजी ने सेना में भर्ती होने के लिए भी कहा था और उसके लिए वे गाँव-गाँव घूमे भी थे। लेकिन विशेष लोग आगे नहीं आये। यह देख वे बड़े ही नाराज हुए। चढ़कर कहने लगे कि क्या हमारे पूर्वजों ने लोगों को बहादुरों की अहिंसा, वीरता सिखलायी ही नहीं?

लोगों में शान्ति की भूख

गांधीजी के जमाने में विशेष शान्ति-सैनिक नहीं मिले। आज सिर्फ पाँच सौ मिले हैं। कुछ लोग काफी विचार कर अपने नाम दे रहे हैं। तब क्या किसी ने लोगों को ऐसे बहादुर बनाने की कीमिया कर दिखायी है? यह जमाने की माँग के मुताबिक ही हो रहा है। हम लोग वैद्यनाथ धाम पहुँचे। जब भीतर

घुसे तो हम लोगों पर खूब मार पड़ी। लेकिन किसी को भी क्रोध नहीं आया। जब कि गांधीजी के सत्याग्रह के समय मार पड़ने पर हम लोगों को क्रोध आ जाता था तो इस समय क्यों नहीं आया? स्पष्ट है कि आज लोगों को शान्ति की भूख लगी है, इसीलिए क्रोध नहीं आया। हम लोग गये तो थे भगवान का दर्शन करने, पर लाभ हुआ भगवान के प्रत्यक्ष स्पर्श का!

सर्वोदय वसिष्ठाश्रम बनने जा रहा है

जमाना इतना बदल गया है कि अब हम लोग साँचेबंद विचार नहीं करते। सर्वोदय-पात्र के काम में सभी रचनात्मक कार्यकर्ता मिलकर काम करें। मास्टर तारासिंह, इंदिरा गांधी यहाँ आये हैं। कम्युनिस्ट बन्धुओं ने सन्देश भेजा है। यह वसिष्ठ का आश्रम बनना चाहता है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि वैर छोड़ दीजिये और प्रेम कीजिये। उससे आप भारत का सभी जमातों के साथ एकरूपता का अनुभव करेंगे। पक्षों से टकराइये नहीं, सब अपने ही हैं। मैं देह की सभी शक्तियों का आवाहन कर रहा हूँ कि 'अगर है शौक मिलने का, तो हरदम लौ लगाता जा!' एक छोटी-सी चीज! लेकिन उससे प्रेम-संबंध जुट जाता है। इसलिए सर्वोदय-पात्र रखिये, पक्षातीत बनिये और शान्ति-सैनिक होइये।

मैं सभी भेद मिटाना चाहता हूँ

लोग पूछते हैं कि आप कार्यकर्ताओं के कितने प्रकार (ग्रेड) करेंगे? मैं कहता हूँ—मैं सभी प्रकार के भेद मिटाना चाहता हूँ। मैं किसी भी प्रकार की प्रतिज्ञा नहीं चाहता। मैं जानना चाहता हूँ कि काम करनेवाले कौन-कौन हैं? नाम देने के कारण मनुष्य अपनी वैसी वृत्ति बना पाता है। अगर हिंसा शीघ्र रक्षण देगी और अहिंसा न देगी—याने हिंसक अपना काम कर जायँगे और अहिंसक अपनी जगह हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहें, तो काम कैसे चलेगा? इसलिए मौके पर कौन-कौन शान्तिमय बलिदान के लिए तैयार हैं, इसकी जानकारी रहना आवश्यक है।

मनुष्य तीन प्रकार से कमाता है

मैं जानता हूँ कि सर्वोदय-पात्र पर भिक्षापात्र होने का आक्षेप किया जाता है। अनेक जमातें और भिक्षुसंघ आये और गये। मैंने १९३७ में एक लेख लिखा था—मनुष्य तीन प्रकार से कमाता है (१) भिक्षा (२) व्यवसाय और (३) चोरी। कम देना और ज्यादा लेना चोरी है। जितना देना, उतना ही लेना व्यवसाय या धन्धा है। और कम से कम लेने का नाम है भिक्षा। अब हरएक स्वयं ही सोचे कि हम इनमें से कौन हैं?

बहुत ही कम लेकर भी कदाचित् मेरी चोरों में ही गणना होगी। मेरा चौगुना खर्च होता है। बिना दूध के मेरा नहीं चलता। यह सब करते समय वेदनाएँ होती हैं। फिर भी उससे—उस चोरी से—मेरी मुक्ति तो हो नहीं सकती। रमण महर्षि की बात है। डाक्टरों ने उन्हें बीमारी में फल खाने के लिए बताया, किन्तु उन्होंने कहा कि जो साधारण जनता को मिल नहीं पाता, वह मैं कैसे ग्रहण करूँ?

आखिर वे मर गये। मुझे उनका मत्सर होता है। किन्तु मुझे भूदान, ग्रामदान का मोह चिपका हुआ है। इसलिए आप का या मेरा नंबर भिक्षा या धंधे में आ नहीं सकता। मैं रमण महर्षि जैसे भिक्षावालों की जमात बढ़ाना चाहता हूँ। पुराने जमाने के भिक्षुक श्रम से बचते थे। धीरे-धीरे वह आलसियों की एक जमात बन गयी। हमारी ऐसी अवस्था न हो, इसलिए हमारे कार्यकर्ता तीन घंटे शरीर-श्रम करेंगे। मैं यह भी कोई कानून बनाना नहीं चाहता। शरीरश्रम में सेवा-शुश्रूषा, सफाई आदि आ जाते हैं। वास्तव में सारा जीवन ही सेवामय होना चाहिए। फिर कोई प्रश्न ही न उठेगा। कोई भले ही माने कि मेरा उनसे मतभेद है, लेकिन मैं नहीं चाहता कि किसी से मेरा मतभेद रहे।

[यह भाषण समाप्त होने के बाद पू० विनोबाजी ने सभी को १ मार्च को भोर में ५ बजे अजमेर के प्रसिद्ध दरगाह में उनके साथ चलने का निमन्त्रण दिया।]

उन्होंने कहा—

दस वर्ष पूर्व दरगाह के रक्षण के लिए मैं वहाँ था। वहाँ मेरी प्रार्थना हुआ करती। यह मुसलमानों का प्रसिद्ध पवित्र स्थान है, इसीलिए इस बार यहाँ सम्मेलन का आयोजन किया गया। फिलस्तीन में सम्मेलन करने का अवसर आये, तो यरूशलम में वह होगा। मैं पंथ का अभिमानी नहीं, कारण यहाँ शुद्धतापूर्वक कठिन तपश्चर्या हुई है। कल के दरगाह के कार्यक्रम में स्त्रियाँ भी अवश्य भाग लें। जैसे पंढरपुर के मन्दिर में सभी जाति और धर्म के लोग पहुँचे, वैसे ही यहाँ भी सभी आयें। नास्तिक भी आयें। इस्लाम का सन्देश बड़ा ही पवित्र है। वह गरीब और श्रीमान का भेद नहीं मानता। सूदखोरी का उसने तीव्र निषेध किया है। वह लोकतंत्र का एक आदर्श है। मैं घोषित करना चाहता हूँ कि 'मैं मुसलमान भी हूँ, सिख भी हूँ और ईसाई भी हूँ।'

[पूर्वनिश्चित कार्यक्रम के अनुसार दूसरे दिन हजारों स्त्री-पुरुष विनोबा के साथ दरगाह शरीफ में पहुँचे।]

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

सिघानी (पंजाब) २-४-'५९

आजादी के बाद एकमात्र कार्यक्रम सर्वोदय-आन्दोलन

अभी एक भाई ने आपको सूर गाँव की कहानी सुनायी। हम वहाँ भंगी-काम करते थे। पौने दो साल तक हमारा वह काम चला। पवनार (परंधाम) में हमारा आश्रम था। वहाँ से यह गाँव ३ मील दूर था। प्रतिदिन सवा घंटा झाड़ू लगाना, मैला उठाना, खेतों में डालना, उस पर मिट्टी ढँकना—यही हमारा काम था। एक फावडा लेकर हम रोज जाते थे। परशुराम के हाथ में परशु होता है वैसे ही हम फावड़ेराम बन गये। सर्दी, गर्मी और वर्षा में भी हमारा काम चलता रहा। ठंढ और धूप तो इंसान को नहीं रोक सकती, लेकिन बहुत ज्यादा बारिस उसे रोक सकती है। उधर काली मिट्टी है। वह बहुत चिकनी है। थोड़ा-सा पानी पाते ही एकदम कीचड़ हो जाता है। फिर पाँव अंदर धसने लगते हैं। इससे नियमितता खंडित होने की संभावनाएँ होती हैं। लेकिन हमारा क्रमभंग नहीं हुआ। हम बराबर आते-जाते रहे। अगर आज गाँधीजी होते तो हम वहीं होते। वह काम बहुत छोटा था, फिर भी हमें बहुत प्यारा था। हम सेवा को भगवान की पूजा का माध्यम मानते हैं। जनता को हम स्वामी समझते हैं। स्वामी की सेवा करने से दिल को तसल्ली मिलती है, ठंढक पहुँचती है।

आजादी के बाद प्रयोग

भारत आजाद हुआ। गांधीजी चले गये। देश में काम करने-वाले कार्यकर्ता भी मायूस हो गये। सबको लगने लगा कि अब अहिंसा चल सकेगी या नहीं? उस समय हमें लगा कि अब बाहर निकलना चाहिए और लोगों का भी हमारे लिए वैसा ही आग्रह रहा। तब हम पहली बार वर्धा छोड़कर देश-दर्शन के लिए निकले। दिल्ली आये। वहाँ दो-चार दिन रहकर बड़े नेताओं से विचार-विनिमय किया। उसके बाद सबसे पहले काम करने की दृष्टि से पंजाब आये। गुडगाँव में मेवों, शरणार्थियों और पुरुषार्थियों के बीच काम किया। उस समय हम रेल, मोटर आदि से यात्रा करते थे। लेकिन इस समय पैदल आये हैं। अभी लोगों के मन में उत्साह है। सभी को यह लगता है कि यह शख्स पैदल आया है, इसलिए इसकी बात सुननी चाहिए। जब हम मोटर से घूमते थे, तब हमारी पहुँच लोगों के दिलों तक नहीं होती थी। पदयात्रा के जरिये हम उनके दिलों तक पहुँच सकते हैं। यह बात उसी समय हमारे ध्यान में आ गयी थी। पर हमने इसे जाहिर नहीं किया।

गुडगाँव से लौट कर हमने अपने आश्रम में कांचन-मुक्ति का प्रयोग शुरू किया। हमारे इस प्रयोग में कालेज के लड़के भी सम्मिलित हुए। वे लोग खेती का काम खूब करते थे। मैं भी उनके साथ खेती का काम करता था। मजदूर का जीवन बिताने लगे। लोगों से समरस होने का वह तरीका था।

पदयात्रा

उसी समय हैदराबाद प्रदेश में सर्वोदय-सम्मेलन होना तय हुआ। हम इस सम्मेलन में नहीं जाना चाहते थे। किन्तु लोगों का बहुत आग्रह देखकर हमने सम्मेलन में सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया। उस दिन हम सेवाग्राम में थे। वहाँ सन्ध्या-सभा में हमने सम्मेलन में पैदल पहुँचने की घोषणा कर दी। यह बात सुनकर लोगों में घबराहट पैदा हुई। तीन सौ मील की पद-यात्रा! यद्यपि गुरु नानक, कबीर, रामानुज, शंकराचार्य, गौतम बुद्ध, महावीर आदि सभी पैदल घूमते थे और लोगों तक ज्ञान पहुँचाते थे। लेकिन मध्ययुग में पदयात्रा कम हो गयी। इस लिए जब हमने पैदल चलना शुरू किया तो उसमें लोगों को पागलपन लगने लगा। अब पदयात्रा के काम का एक महत्त्व हो गया है। अब सारे लोग इसे जन-संपर्क का बेहतर तरीका मानने लगे हैं। कांग्रेस ने भी अपने लोगों को पदयात्रा करने का आदेश दिया है। इससे हर प्रान्त में दो-तीन दिन जो भी हो, लोग नाटक तो करते ही हैं। खैर!

हैदराबाद-सम्मेलन से लौटते हुए लोग तेलंगाना पहुँचे। वहाँ उस समय दंगा-फसाद हुआ था। लोग काफी घबडाये हुए थे। घरों से बाहर निकल कर आने में भी खतरा महसूस होता था। तब भी हम वहाँ गये। लोगों से मिले। गरीबों से भी बात हुई। वहाँ के लोगों ने जमीन की माँग की। हमने उनकी माँग को अपनी प्रार्थना-सभा में सबके सामने रखा। एक भाई ने उसी दिन भूदान दिया। उस दिन से यह भूदान यात्रा हो गयी। तब से हम अब तक घूम ही रहे हैं। इस यात्रा-काल में अब तक लगभग सात लाख लोगों ने दान दिया है। पचास लाख एकड़ जमीन मिली है।

ग्रामदान में पंजाब पीछे न रहे

अभी यहाँ भी कुछ दान मिला है। खूब दान देना चाहिए। 'हाथ दिये कर दान रे'। भगवान ने खूब दान करने के लिए दी यह हाथ दिये हैं। इसी में नरजन्म की सार्थकता है। हाथ से दूसरे को मदद भी पहुँचा सकते हैं और दूसरे का गला भी दबा सकते हैं। अच्छा काम करने से ही मनुष्य का जन्म सार्थक होगा।

हमने पहले भूदान की बातें बताई। अब हम ग्रामदान की बातें समझाते हैं। हम कहते हैं कि जमीन सारे गाँव की है। जैसे हवा, पानी सबके लिए हैं, वैसे ही जमीन भी सबके लिए है। लोग हमारे इस विचार को कबूल करने लगे हैं। आपके इस पंजाब में तो अभी तक एक भी ग्रामदान नहीं हुआ है। लेकिन आपके पड़ोसी राजस्थान सूबे में २०० से भी अधिक ग्रामदान हुए हैं। राजस्थान के पास बंबई प्रदेश है। वहाँ ५०० ग्रामदान हुए हैं। हम जहाँ-जहाँ भी गये, वहाँ-वहाँ ग्रामदान हुए हैं। तब क्या पंजाब सबसे पीछे रहेगा? पंजाब भारत का मस्तक है। यह सप्तसिन्धु का प्रदेश माना जाता है। यहाँ व्यास, सतलज, सिन्धु जैसी बड़ी-बड़ी नदियाँ हैं। जिनके किनारे पर वेद-ध्वनियाँ होती रहीं। भारत और सारी दुनिया में यहाँ से सभ्यता और संस्कृति की आवाज बुलन्द हुई है। इसलिए हम आशा करते हैं कि यह प्रान्त खूब काम करेगा।

हमारा प्रेम बढ़ाने का काम है। सुर गाँव में हमने जो काम प्रारंभ किया था, वह भी प्रेम का ही काम था। आज भी हम प्रेम के काम को ही महत्त्व देते हैं। दुनिया में बहुत सी समस्याएँ हैं। वे प्रेम के अभाव के कारण ही उत्पन्न हुई हैं। जैसे-जैसे समाज में प्रेम बढ़ेगा, मनुष्य मनुष्य के लिए स्नेह रखेगा—वैसे-वैसे सारी समस्याएँ हल होती जायेंगी।

[चालू]

जय जगत्

'जय जगत्' मन्त्र का अर्थ है—हम सब मानव हैं। सारा मानव-समूह एक है। सभी मानवों के विचार और कमाई का परस्पर आदान-प्रदान होना चाहिए। 'जय जगत्' मन्त्र हमारी संस्कृति से पैदा हुआ है। हमें अखिल विश्व के विचार की ओर जाना है। यह अखिल विश्व-मानव-वृत्ति हमारी सांस्कृतिक देन है।

◆◆◆

अनुक्रम

१. जागतिक समस्याओं का हल ढूंढ़ना ही हमारा उद्देश्य है! ...
सर्वोदय-नगर २८ फरवरी '५९ पृष्ठ ३४५

२. आजादी के बाद एकमात्र कार्यक्रम सर्वोदय-आन्दोलन...
सिंघानी २ अप्रैल '५९ ,, ३४७

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।